कथा-मुखी

[बालोपयोगी लोककथायें]

कविता कुमारी

श्री शैलेन्द्र मोहन झा एम० ए०

प्रकाशक
मिथिला प्रकाशन
लहेरियासराय

संस्करण
प्रथम—दो हजार प्रतियाँ

मूल्य :—पचहत्तर नये पैसे

मुद्रक
श्री सूर्य्यनारायण झा
अभिनव विद्यापति प्रेस, लहेरियासराय

प्रेरणा

श्री 'वरुण' जी अब कथा का मर्म समझने लगे हैं। इससे मेरे ऊपर एक नया भार आ गया है। रात होते ही मेरे पास दौड़े आते हैं कथा सुनने; और मुझे जरूरी से जरूरी काम छोड़कर उनको बहलाना पड़ता है। वे ध्यान पूर्वक कथा सुनते रहते हैं। कभी तो अपनी जिज्ञासा को शान्त करने के लिये वे प्रश्न पर प्रश्न पूछने लगते हैं तो कभी किसी कारुणिक प्रसंग को सुनकर कलेजे से चिपट जाते हैं।

यह कथा सुनाना मेरा नित्यप्रति का काम हो गया है। ऐसा भी होता है कि सारी कथा सुने विना उन्हें बीच ही में नींद आ जाती है।

कथा सुनाने के इस क्रम में बचपन के भूले-बिसरे दिन लौट आये हैं। कथा सुनने का यही उत्साह मुझ में भी था। बचपन में सुनी ये लोक कथायें आज भी वैसी ही प्यारी लगती हैं। आज जब लोक साहित्य के संकलन का सामूहिक प्रयास हो रहा है, तो इन कथाओं को लिपिबद्ध करने का लोभ कैसे संवरण किया जा सकता था? सहृदय प्रकाशक की कृपा से अब ये प्रकाशित भी हो रही हैं।

इस बीच में 'वरुण' जी पढ़ना भी सीख गये हैं। अब तो वे स्वयं इन्हें पढ़ लेंगे, दूसरों को पढ़कर सुना भी सकेंगे। उनके साथ-साथ दूसरे बच्चों का भी इन कथाओं से मनोरंजन हो सका तो इन्हें प्रकाशित कराना विशेष लाभप्रद होगा। यही मेरी हार्दिक अभिलाषा भी है।

—लेखक

विषय-सूची



इनाम

एक थे राजा। उन्हें थी कथा सुनने की आदत। कितना भी सुनते थे मन ही नहीं भरता था। इच्छा थी कि ऐसी कथा सुनें जो खत्म ही नहीं हो।

राज्य भर में खबर की गई। जो ऐसी कथा सुनावेगा राजा उसे इनाम देंगे—एक डाला सोना, एक डाला रूपा।

दूर-दूर से लोग आये। बड़े-बड़े कथावाचक पंडित से लेकर साधारण से साधारण कथक्कर भी थे। किसी की कथा एक रात चली, किसी की दो रात। फिर वह खत्म हो गई।

परन्तु राजा और सुनना चाहते थे। सन्तोष ही नहीं होता था। सभी हार कर लौट जाते। किसी को भी इनाम नहीं मिलता।

उसी राज्य में एक नाई रहता था। वह राजा के दरबार में आया और बोला—मैं राजा को कथा सुनाना चाहता हूँ।

दरबारी हँसने लगे। जहाँ बड़े-बड़े पंडित हार गये, वहाँ ये आये हैं बड़े सुनाने वाले।

परन्तु इससे क्या ?

रात में राजा सोने गये। नाई को बुलवा भेजा। राजा पलंग पर सोये। नीचे चटाई पर नाई बैठा।



नाई ने कहना शुरू किया—किसी वन मे बरगद का एक बड़ा पेड़ था। उसकी छाया दूर-दूर तक फैली थी।...

राजा ध्यान से सुन रहे थे।

नाई ने कहा—उस पेड़ पर बहुत-से पंछी रहते थे—अनगिनत। एक बार एक बहेलिया आया। बरगद के

पेड़ को देखता रहा। फिर मन-ही-मन खुश होता हुआ लौट गया।···

राजा ने हुँकारी भरी।

दूसरे दिन साँझ में बहेलिया फिर आया। एक बड़ा जाल उसने पेड़ पर फैला दिया। सभी पंछी उसमें फँस गये।···

तब क्या हुआ ?—राजा ने पूछा।

नाई बोला—संयोग से जाल एक जगह फटा था। उस होकर एक-एक कर चिड़िया निकलने लगी। पहले एक चिड़िया उड़ी फुर्र······

उसके बाद ?—राजा ने पूछा।

फिर दूसरी चिड़िया उड़ी फुर्र।······

राजा बार-बार पूछते रहे।

नाई ने कहा—फिर तीसरी उड़ी फुर्र···चौथी उड़ी फुर्र···पाँचवीं उड़ी फुर्र···।

फिर आगे क्या हुआ ? राजा ने प्रश्न किया।

नाई कहता रहा—छठी उड़ी फुर्र···सातवीं उड़ी फुर्र।···

राजा का धीरज जाता रहा—इसी तरह चिड़िया उड़ाते रहोगे या कथा भी कहोगे ?

नाई ने उत्तर दिया—जब तक सभी चिड़िया उड़ नहीं जाती, तब तक आगे कैसे कहूँगा ।

राजा नाई की चालाकी तार गये । उन्होंने हार कबूल कर ली । चिड़िया उसी तरह उड़ती रही । कथा खत्म नहीं हुई ।

दूसरे दिन दरबार लगा । नाई को बुलाया गया । राजा ने उसकी चतुराई की तारीफ़ की ।

फिर अपने हाथ से इनाम दिया—एक डाला सोना, एक डाला रूपा ।



सुरहिन गाय

सुरहिन गाय और उसका बछवा, दोनों ही आनन्द से रहते थे।

एक दिन गाय गई चरने जंगल में और बच्छा रहा घर पर।

एक वन गई, दूसरे वन गई और फिर पहुँची कदली वन।

कदली वन में एक बाघ रहता था।

बाघ को देखते ही गाय का मुँह मलिन हो गया। वह सोचने लगी—अब तो यह जरूर ही खा जाएगा।

फिर बाघ से बोली—मेरा बछवा भूखा होगा। उसे दूध पिला के आती हूँ, तब खा जाना।

बाघ बोला—तेरी बात का क्या भरोसा ?

गाय बोली—चाँद, सुरूज गवाह हैं। मैं थोड़ी देर में लौट आऊँगी।

बाघ मान गया।

उदास मन से गाय पहुँची घर पर। न रँभाई, न बोली। बिल्कुल गुमसुम थी।

बछवा ने पूछा—मैया ! आज तू उदास क्यों है ?

गाय ने सारी घटना कह सुनाई। फिर रोती हुई बोली—अब तू पेट भर दूध पीले, बेटा ! मैं बाघ से वादा करके आई हूँ।

बछवा ने कहा—मैं दूध नहीं पीता। तुम्हारे साथ मैं भी चलूँगा। तुझे खायगा तो मुझे भी खायगा।

आगे-आगे बछवा, पीछे-पीछे गाय।

बछवा उछलता-कूदता चलता था और गाय धीरे-धीरे।

दोनों एक वन गये, दूसरे वन गये फिर पहुंचे कदली वन।

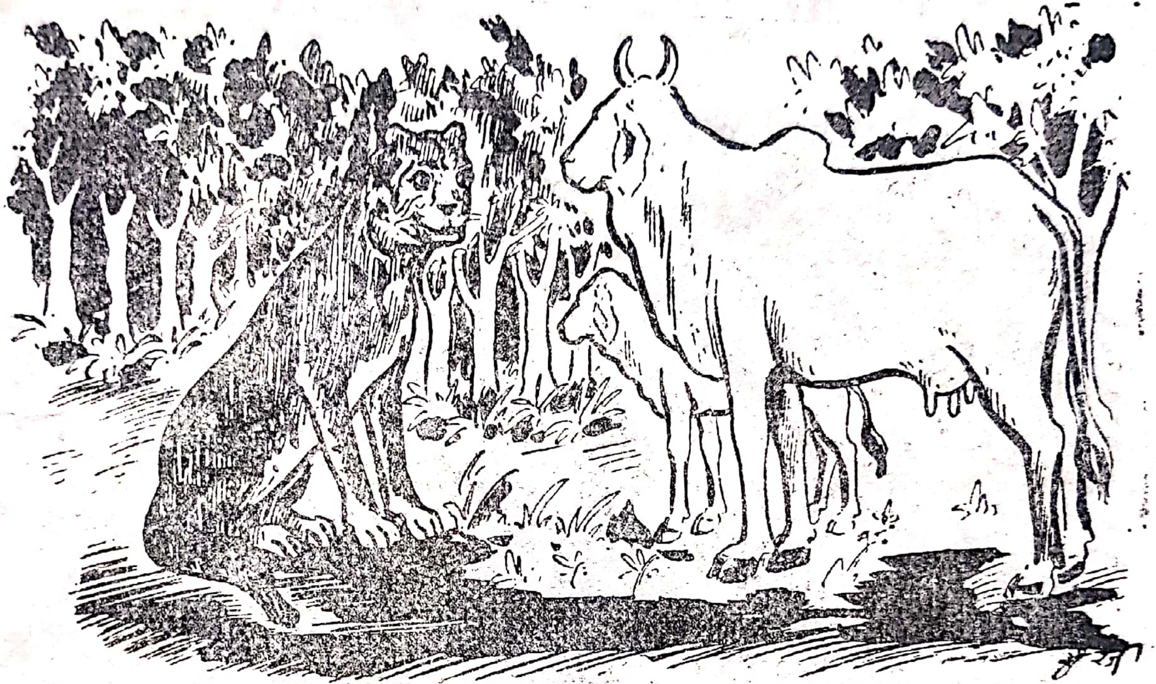
कदली वन में बाघ राह देख रहा था।

गाय को फिर लौटती देखकर उसे आश्चर्य हुआ। वह सोचने लगा—गाय तो वादे की पक्की निकली। लेकिन उसके साथ दूसरा कौन है ?

तब तक दोनों पहुँचे बाघ के पास।

'मामा ! मामा !! प्रणाम—दौड़कर बछवे ने बाघ को प्रणाम किया। बाघ एक टक से देखता रहा।

बछवा बोला–मामा ! पहले मुझे खाओ फिर मैया को खाना ।



यह सुनकर बाघ का दिल पिघल उठा । बछवा को चुमकारते हुए उसने कहा--गाय मेरी बहन हुई और तू मेरा भांजा । अब मैं तुझे नहीं खाऊँगा । यह कदली वन अब से तेरा । दोनों माँ-बेटे बेरोक-टोक चरा करो ।

बच्छे ने फिर बाघ को प्रणाम किया ।

—:०:—

एक था मयूर : एक थी मैना



एक था मयूर, एक थी मैना।

दोनों में गहरी दोस्ती थी—एक दूसरे पर जान देते थे।

दोनों एक ही पेड़ पर घोंसला बनाकर रहते थे।

जब मयूर नाचता तो मैना गाती। सारा जंगल नाच-गान से जगमगा उठता था।

मयूर नाचता तो उसके पंख से नीलम की आभा छिटकती थी।

मैना गाती तो उसके कंठ से बाँसुरी की मिठास निकलती थी।

दोनों के दिन हँसी-खुशी से बीतते जाते थे।

एक बार मैना को न्योता मिला बाराती जाने का। उसने अपने रूप-रंग पर विचार किया। उसकी टाँग थी छोटी-छोटी और काली-काली। कहीं जाने में लाज आती थी।

उसने सारा हाल मयूर से बताया। फिर बोली— दोस्त! यदि कुछ दिन के लिये तुम अपनी टाँग मुझसे बदल लो तो मैं बाराती से हो आऊँ।

मयूर ने कहा—बहुत अच्छा। उसने अपनी टाँग मैना को दे दी और उसकी खुद ले ली।

मैना चली गई बारात में।

अपने सुन्दर शरीर में मैना की छोटी टाँग मयूर को भद्दी लगती थी। पर करे तो क्या? वह मैना के आने का दिन गिनने लगा।

एक दिन मैना लौटकर आ गई। मयूर ने अपनी टाँग माँगी। मैना ने अनसुनी कर दी। उसकी नीयत बदल गई थी।

मैना वहाँ से चली गई। दूसरे पेड़ पर घोंसला बनाकर रहने लगी।

मयूर छटपटाता रह गया। मैना ने उसकी टाँग नहीं लौटाई। उस दिन से मयूर की टाँग रह गई छोटी-छोटी और मैना की हो गई बड़ी-बड़ी।

अब भी जब कभी मयूर नाचता है तो उसे अपनी काली भद्दी टाँग का ध्यान आ जाता है। वह लाज से मैना का नाम ले-लेकर रोने लगता है—मै······ना; मै······ना···।



चतुर बत्तू

एक था बत्तू। खूब मोटा। लम्बी-लम्बी दाढ़ी थी और देह से बदबू निकलती थी। सूने आँगन में जाकर सूखते अनाज खा लिया करता था।

एक बार गाँव के लड़कों ने ले जाकर उसे जंगल में बाँध दिया। सोचा कि कहीं से बाघ आएगा और खा जाएगा। इस तरह सदा के लिए इससे छुटकारा मिल जायगा।

बात भी वही हुई। एक बाघ उधर से आ निकला। दूर ही से उसने देखा बत्तू को। उसने पहले ऐसा जानवर नहीं देखा था। सोचने लगा—यह विचित्र जानवर कौन है? करीब जाकर बोला—

चित्ती दाढ़ी मुँह भाकुरा।
कहाँ आए हैं देव ठाकुरा।

बत्त्‌ डर गया कि यह बाघ उसे जरूर मार डालेगा। फिर भी कोई राह निकालनी थी। उसने कहा-

बाघ मारूँ, सिंह मारूँ
मारूँ हरिण पचास
जिस दिन दस-बिस बाघ न मारूँ
उस दिन तो उपवास।

बाघ ने सोचा-अरे! यह तो मुझ से भी जबर्दस्त जानवर निकला। तब तो जरूर ही खा जायेगा। और वह प्राण बचाने के लिये भाग खड़ा हुआ।

बत्त्‌ को कहीं से जान आई।

बाघ भागा जा रहा था कि रास्ते में सियार से भेंट हुई। बाघ को अपनी ओर आता देख वह घबरा गया। लेकिन बाघ तो अभी खुद ही परेशान था। उसने सियार से सारा हाल कहा कि जंगल में एक विचित्र जानवर आया है।

सियार तो होता है पंडित। उसे बात समझने में देर नहीं लगी। बाघ से कहा-आप भी किससे डरते हैं? वह क्या खाकर आपकी बराबरी करेगा? वह जरूर ही बत्त्‌ होगा। आप मेरे साथ चलिये तो।

फिर भी बाघ को भरोसा नहीं हुआ। बोला—नहीं रे! तेरा क्या ठिकाना? तू बड़ा चालाक है। कहीं मुझे छोड़कर भाग आया तो वह मुझे निगल ही जायगा।

अंत में बात तय हुई कि दोनों एक रस्सी में अपनी-अपनी गरदन बाँध लें और साथ-साथ चलें। इससे कोई किसी को छोड़कर नहीं भाग सकेगा।

एक रस्सी लायी गई। एक शिरे में बाघ ने अपनी गरदन बाँधी, दूसरी ओर सियार ने। दोनों उस ओर चले जिधर बत्तू था।

बत्तू ने बाघ को देखा। सियार को साथ में देखकर वह समझ गया सारी करामात इसीकी है। वह सोचने लगा कि क्या किया जाय? अन्त में उसने एक चाल चली।

दोनों को नजदीक आया देख वह जोर से चिल्लाया—क्या रे गीदर! इतनी देर के बाद यह एक ही बाघ लेकर आया है? इसीसे मेरा पेट भरेगा? तुझे तो मैंने आठ-दस बाघ लाने कहा था।

बाघ तो पहले ही से डरा था। यह सुनकर उसे

और भी पक्का हो गया कि सियार उसे ठगकर ले आया है। वह जान लेकर भागा—साथ-साथ सियार को घसीटते।



सियार करता भी क्या? उसकी गरदन तो बाघ के साथ बँधी थी। वह राह में ही मर गया।

आँझुल

एक था राजा का बेटा और दूसरा था डोम का बेटा। दोनों ने एक बार जूआ खेला। राजा का बेटा सब कुछ हार गया—राजपाट, धन-जन, देह पर का कपड़ा-लत्ता भी।

उसकी एक बहन थी। नाम था आँझुल। अन्त में उसे ही दाव पर रखा। पर इस बार भी हार गया।

डोम के बेटे ने कहा--अब आँझुल मुझे ला दो। तुम तो हार गये हो।

राजा का बेटा बोला--तुम कमल का फूल बन जाओ। मैं आँझुल से कहूँगा तोड़ लाने। फिर तू उसे अपने पास पकड़ रखना।

डोम के बेटे ने वही किया। वह एक पोखरे में कमल का फूल बन गया। भाई के साथ आँझुल गई वहाँ तो फूल पर नजर पड़ी। भाई से कहा—मुझे वह फूल चाहिये। भाई ने कहा—करीब ही तो है। जाकर तोड़ लो।

आँझुल गई फूल तोड़ने। घुटने भर पानी में गई। फूल तोड़ने के लिये हाथ बढ़ाया ही था कि फूल आगे खिसक गया। यह देखकर भाई से बोली--

ठेहुना पनियाँ आई हो भइया
फुलवा जाय बड़ी दूर।

भाई ने कहा--और जाओ बहन, निकट जाओ बहन।

आँझुल छाती भर पानी में गई। फूल आगे खिसकता गया। वह फिर भाई से बोली--



छतिया पनिया आई हो भइया
फुलवा जाय बड़ी दूर।

भाई बोला--और जाओ बहन, निकट जाओ बहन।

आँझुल और आगे बढ़ी। फूल बढ़ता ही गया। पानी नाक तक पहुंच गया। आँझुल फिर भाई से बोली--

नकवा पनिया आई हो भइया
फुलवा जाय बड़ी दूर।

भाई जहाँ कुछ उत्तर देना ही चाहता था कि डोम के बेटे ने आँझुल की टाँग खींच ली। वह पानी के नीचे चली गई।

राजा का बेटा लौट कर घर चला आया। आँझुल को साथ नहीं देखकर सबों ने पूछा। उसने कहा—वह तो कब न लौट आई।

एक दिन हुआ, दो दिन हुए, आँझुल की कोई खबर न मिली। सभी रो-धो कर चुप हो गये।

आँझुल ने एक सूगा पोसा था। नाम था उसका सारिल। आँझुल के बिना वह बड़ा ही उदास रहता था।

राजा की एक नौकरानी थी—चेरिया। चेरिया को यह सूगा फूटी आँख भी नहीं सुहाता था। वह रोज आँगन बुहारते समय सूगे को मारती और कहती—जाओ न अपनी आँझुल के पास।

सारिल उड़ा-उड़ा जाता था और पोखरे की जाठ पर बैठ कर रोने लगता—

आँझुल हे दिदिया! आँझुल हे दिदिया,
चेरिया मारे बढ़नी के हाथ।

उसी पोखरे में तो आँझुल थी। जब उसने अपने सूगे का रोना सुना तो नीचे से बोली—

चुप रहो ! चुप रहो ! सारिल हे सुगवा,
भैया हारे डोम के हाथ।

सूगे ने जब यह सुना तो समझ गया कि उसकी आँझुल यहीं है। तब से वह रोज-रोज वहाँ आने लगा और जाठ पर बैठ कर रोया करता—

आँझुल हे दिदिया ! आँझुल हे दिदिया !!
चेरिया मारे बढ़नी के हाथ।

यह सुनकर नीचे से आँझुल कहा करती थी—

चुप रहो ! चुप रहो !! सारिल हे सुगवा
भैया हारे डोम के हाथ।

एक दिन ऐसा हुआ कि राजा के एक सिपाही ने इसे सुन लिया। वह दौड़ता गया राजा के पास। राजा से बोला—सरकार ! जी-जान बख्स दें तो एक बात कहूँ।

राजा ने कहा—ठीक तो है। कुछ पाया है तो ले लो और नहीं, कुछ देखा है तो दिखा।

सिपाही ने सारा हाल कह सुनाया।

फिर राजा गये सिपाही के साथ पोखरे तक। तब तक सुगा उड़ा-उड़ा आया और जाठ पर बैठ कर रोने लगा।

आँझुल हे दिदिया! आँझुल हे दिदिया!

चेरिया मारे बढ़नी के हाथ।

पानी के तले से आँझुल बोली—

चुप रहो, चुप रहो, सारिल हे सुगवा।

भैया हारे डोम के हाथ।

राजा ने जब सुना तो आँखें भर गयीं। तुरत मल्लाह बुलाये गये। तालाब का पानी उलीचा गया। जब आँझुल निकली तो राजा छाती से सटाकर रोने लगे।

जब राजा को सारी बात मालूम हुई तो राजकुमार पर बेहद रंज हुआ। उन्होंने हुक्म दिया कि राजकुमार को और डोम के बेटे को उसी पोखरे में गाड़ दिया जाय।

राजा के बेटे और डोम के बेटे को उसी पोखरे में गाड़ दिया गया आँझुल अपने सारिल के साथ आनन्द से रहने लगी।

———

कुट, कुट, कुट

एक थी गोरैया। एक दिन वह जाकर बैठी एक कुश पर। कुश ने उसकी देह चाँछ दी।

कुश से वह बोली—कुश! कुश! मुझे चाँछ क्यों लगाया?

कुश ने जवाब दिया—मुझे गाय चरती ही नहीं है।

गोरैया गयी गाय के पास—गाय! गाय!! तू कुश को क्यों नहीं चरती है?

मुझे चरवाहा चराता ही नहीं है—गाय बोली।



गोरैया तब गयी चरवाहे के यहाँ। बोली—रे चरवाहा! रे चरवाहा! तू गाय को चराता क्यों नहीं है?

मुझे मालकिन नाश्ता नहीं देती—चरवाहे ने कहा।

गोरैया को तब जाना पड़ा मालकिन के पास। वहाँ जाकर बोली—ओ मालकिन! ओ मालकिन!! तू चरवाहे को नाश्ता क्यों नहीं देती है?

मेरा बच्चा रोने लगता है—मालकिन बोली।

गोरैया गयी बच्चे को पूछने—रे बच्चा! रे बच्चा! तू रोने क्यों लगता है?

मुझे चींटी काट लेती है—बच्चे ने कहा।

गोरैया चींटी से पूछने गयी—अरी चींटी! री चींटी! तू बच्चे को क्यों काटती।

चींटी बोली—कुट, कुट, कुट,

गोरैया वहाँ से लौट आयी।

—:०:—

पर्वत-पहाड़ पर खोंता रे खोंता

एक था ब्राह्मण। एक बार उसने की चीन की खेती। चीन खूब फला। देख-देखकर ब्राह्मण का मन फूला नहीं समाता था।

एक थी चुनमुन्नी। उसका खोंता था पर्वत-पहाड़ पर। वह रोज आ-आकर चीन खा लिया करती थी।

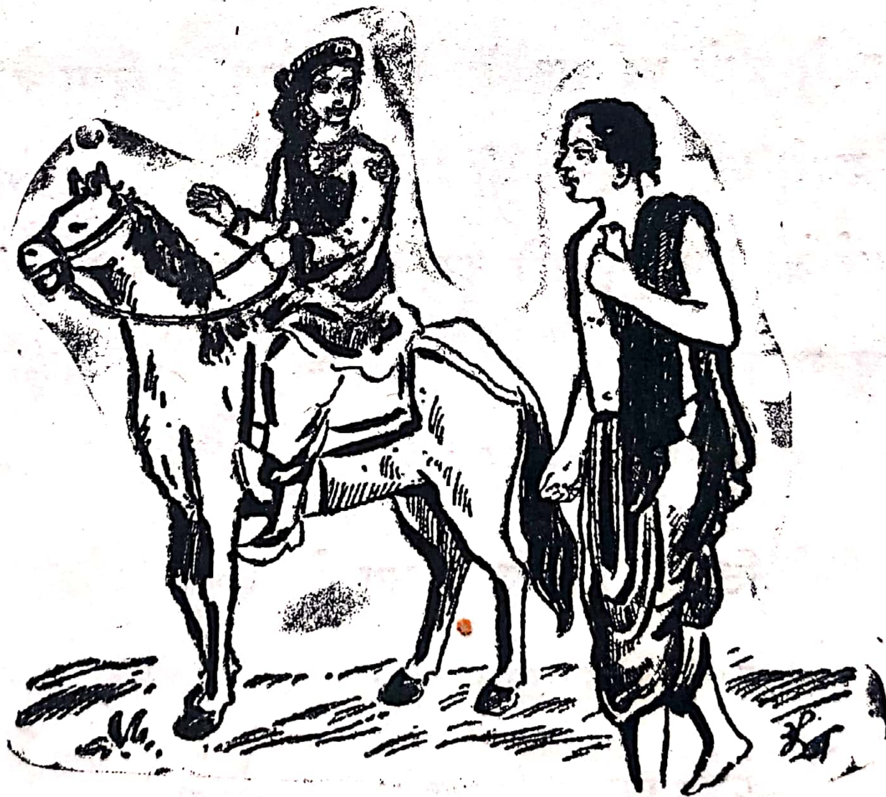
एक दिन हुआ, दो दिन हुए, पर एक बार ब्राह्मण ने उसे पकड़ लिया। वह उसे ले चला घर की ओर। चुनमुन्नी कितना भी रोयी, गिड़गिड़ायी, लेकिन ब्राह्मण छोड़ने को राजी नहीं हुआ।

रास्ते में एक हाथी वाला आ रहा था। उसे देखते ही चुनमुन्नी रो-रोकर कहने लगी।

हो हाथी वाले भैया !
जिसका चिनमा खाया हो भैया
वही पकड़े जाता है
पर्वत-पहाड़ पर खोंता रे खोंता

बच्चा भूखों मरता है।
राम चुन चुन चुन।

यह सुनकर हाथी वाले ने ब्राह्मण से कहा—हे ब्राह्मण! मेरा यह हाथी ले लो और इस चिरैया को छोड़ दो। ब्राह्मण राजी नहीं हुआ। कुछ दूर आगे जाकर चुनमुन्नी ने एक घोड़ा वाले को देखा। फिर चुनमुन्नी लगी विलाप करने—



हो घोड़ा वाले भैया!
जिसका चिनमा खाया हो भैया
वही पकड़े जाता है।

पर्वत-पहाड़ पर खोंता रे खोंता
बच्चा भूखों मरता है
राम चुन चुन चुन ।

इतना सुनते ही घोड़े वाले को दया आ गई । उसने ब्राह्मण से कहा—ओ जी ! मेरा यह घोड़ा ले लो और इस बन चिरैया को छोड़ दो । पर ब्राह्मण इसके लिये तैयार नहीं हुआ ।

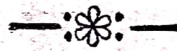
आगे जाने पर राह के किनारे एक बुढ़िया बैठी थी उसके आगे एक पोटली थी । उसमें थी खुदी । माँग-माँग कर लाई थी । बुढ़िया को देखते ही चुनमुनी के रोने का सुर बँध गया ।

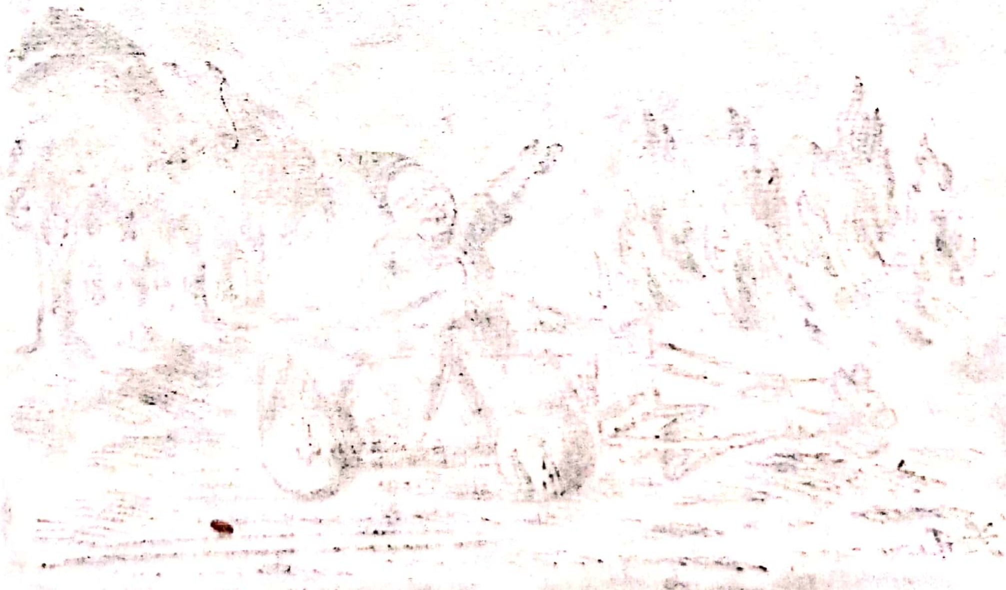
ओ खुदी वाली मौसी !
जिसका चिनमा खाया हो मौसी
वही पकड़े जाता है ।
पर्वत-पहाड़ पर खोंता रे खोंता
बच्चा भूखों मरता है ।
राम चुन चुन चुन ।

यह सुनकर बुढ़िया बोली—हे ब्राह्मण ! मेरी यह पोटली ले लो और इसे छोड़ दो।

ब्राह्मण को बुढ़िया की बात पसन्द आयी। उसने खुद्दी वाली पोटली ले ली और चुनमुन्नी को छोड़ दिया।

चुनमुन्नी उड़ी-उड़ी चली गई। पर्वत पहाड़ पर उसका खोंता था।





'डेढ़ बित्ता'

किसी गाँव में एक गरीब आदमी रहता था। उसे एक बेटा था—पूरे डेढ़ बित्ते का। इससे लोग उसे 'डेढ़ बित्ता' कहा करते थे।

एक बार राजा के सिपाही ने उसके बाप को कैद कर लिया। डेढ़ बित्ता को जब खबर मिली तो वह राजा के यहाँ जाने की तैयारी करने लगा। नरकट काटकर उसने गाड़ी बनाई। उसमें उसने चूहे को जोत दिया। फिर चला राजा के यहाँ।



रास्ते में एक हड्डा मिला। डेढ़ बित्ता से पूछा—कहाँ चले जी?

डेढ़ बित्ता ने कहा—

नरकट से यह गाड़ी बनी है
चूहे बने हैं बैल।
राजा का शैतान सिपाही
दिया बाप को जेल।
उसे छुड़ाने जाते हैं।

हड्डे ने कहा—मुझे भी साथ ले चलोगे ?

डेढ़ बित्ता ने कहा—हर्ज ही क्या। 'आओ जाओ कान में समाओ'—यह कहकर उसने उसे कान में रख लिया।

थोड़ी दूर आगे जाने पर मिली आग। उसने वैसा ही सवाल किया—डेढ़ बित्ता ! कहाँ जाते हो ?

डेढ़ बित्ता ने दुहराया—

नरकट से यह गाड़ी बनी है
चूहे बने हैं बैल।
राजा का शैतान सिपाही
दिया बाप को जेल।
उसे छुड़ाने जाते हैं।

मुझे भी ले चलोगे ?—आग ने पूछा।

डेढ़ बित्ता ने कहा—'आओ जाओ कान में समाओ'—और उसे भी कान में रख लिया।

और आगे जाने पर पानी मिला। उसने भी साथ जाने की इच्छा जाहिर की।

फिर साँप और लाठी भी डेढ़ बित्ते के साथ हो लिये।

सदल बल डेढ़ बित्ता पहुँचा राज-भवन के पास। सिपाही ने भीतर जाने से रोक दिया। अब क्या किया जाय ? डेढ़ बित्ते को बेहद रंज हुआ। उसने हड्डे को हुक्म दिया दिया कि सिपाही को काट ले।

हड्डा सिपाही पर टूट पड़ा। सिपाही सर पर पाँव रख के भागा। डेढ़ बित्ता भीतर गया। आग से कहा राजा का महल जलाने। लाठी को हुक्म मिला सबको पीटने। साँप को कहा गया रानी को डँसने। सभी अपना-अपना काम बजाने चले।

राजमहल को धू-धू जलता देख राजा दौड़े आये। आकर डेढ़ बित्ता के पाँव पर गिर पड़े। उसके बाप को छोड़ दिया।

डेढ़ बित्ता मान गया। उसने पानी से कहा आग बुताने। लाठी, साँप सबों को मना कर दिया। राजा को जान में जान आई। उन्होंने डेढ़ बित्ता के साथ अपनी बेटी ब्याह दी। आधा राज्य बाँट दिया। डेढ़ बित्ता खुशी-खुशी घर लौट आया।

ब्राह्मण-पुत्र

एक थे राजा और एक थी रानी। राजा को एक भी सन्तान नहीं थी। इससे रानी बहुत उदास रहा करती थी। समय पाकर रानी को एक कन्या हुई—अनुपम सुन्दरी।

कन्या के जन्म लेने के बाद राजा चले गये तपस्या करने जंगल में। बारह वर्ष तक तपस्या करते रहे। जब लौटे तो राजमहल में देखा परम सुन्दरी नव युवती को।

रानी से पूछा—यह कौन है? रानी सर पीटने लगी। हाय राम! आप अपनी बेटी को भी भूल गये।

राजा को घोर आश्चर्य हुआ। तो क्या मेरी बिटिया इतनी बड़ी हो गयी। तब तो इसकी शादी होनी चाहिये।

राजकुमारी यह सुनकर लजा गयी।

राजा ने निश्चय किया कि कल सुबह सबसे पहले जिस पर नजर पड़ेगी उसीसे राजकुमारी का ब्याह होगा।

सुबह में राजा उठे तो देखा ब्राह्मण के एक छोटे

लड़के को जलावन चुनते। राजा ने उसे महल में बुला भेजा। उसीसे राजकुमारी का ब्याह हुआ। रानी का कोई वश नहीं चला।

नगर से हटकर विशाल महल बनाया गया। राजकुमारी अपने छोटे पति के साथ उसीमें रहने लगी।

ब्राह्मण-पुत्र पढ़ने लगा।

जब-जब वह घूमने जाता था तो उसके संगी-साथी पूछा करते—वह महल में रहने वाली सुन्दरी तुम्हारी कौन होती है।

ब्राह्मण-पुत्र लौटकर राजकुमारी से कहता—तुम मेरी कौन होती हो ?

राजकुमारी इस प्रश्न को टाल दिया करती थी—आज नहीं किसी दूसरे दिन बताऊँगी।

इसी तरह कितने वर्ष बीत गये। ब्राह्मण-पुत्र बढ़कर जवान हो गया। फिर भी वह नहीं जान सका कि राजकुमारी उसकी कौन होती है ?

राजकुमारी इस प्रश्न को उसी तरह टालती रही।

ब्राह्मण-पुत्र एक दिन जिद्द ठान ठान बैठा--आज तो बताना ही होगा कि तुम मेरी कौन होती हो। नहीं तो मैं यहाँ से भाग जाऊँगा।

राजकुमारी बोली--अच्छा आज रात में बता दूँगी।

दिन बीत गया। शाम हुई। ब्राह्मण-पुत्र बड़ा ही खुश था। आज जान जायगा कि यह सुन्दरी उसकी कौन है।

अन्धेरा होने पर उसने फिर पूछा।

राजकुमारी ने कहा--सोते समय कहूँगी।

ब्राह्मण-पुत्र खाकर सोने चला गया। आज बिछावन फूल से सजा था। वह प्रसन्न चित्त से राजकुमारी की बाट जोहने लगा।

राजकुमारी ने अपना श्रृङ्गार किया। अच्छे कपड़े पहने। फिर पति की थाली में बचा भोजन किया। आज उसे अपने पति से अपना परिचय देना था। वह लजाती हुई घर में गई। पलंग के पास जाकर खड़ी हो गई। देखा कि पति की आँख लग गई है।

वह पलंग पर बैठने लगी कि फूल के बीच से एक साँप कूदकर भागा। राजकुमारी स्तब्ध रह गई।



ब्राह्मण-पुत्र का फूल जैसा मुँह काला-स्याह हो गया था। राजकुमारी सर पीट-पीट कर रोने लगी।

भौजी की चुनरी

किसी राजा को एक बेटा था और एक बेटी। बेटी का नाम था दान देवी। एक बार गाँव के लोग गये कमला नहाने। दान देवी माँ से बोली—मैं भी कमला नहाने जाऊँगी सो भौजी से जरा चुनरी दिला दो!

भौजी ने चुनरी तो दे दी पर शर्त लगा दी कि चुनरी में कहीं दाग न लगे।

चुनरी पहन कर दान देवी चली गई कमला नहाने। ऐसा संयोग हुआ कि चुनरी पर कौए ने बिट कर दिया। वह साफ करते थक गई पर चुनरी से उसकी दाग धुली नहीं। अन्त में वह डरी हुई आँगन गई और चुनरी को तह लगाकर भौजी के हाथ में थमा दिया। भौजी ने जब अपनी चुनरी यह गति देखी तो उसे बड़ा ही रंज हुआ। न खाया न पीया, जाकर सो रही।

जब राजकुमार आए तो रूठने का कारण पूछा। वह बोली—जब तक दान देवी के खून से मेरी चुनरी नहीं रंगी जायगी तब तक मैं कुछ नहीं खाऊँगी।

राजकुमार ने कहा—तो यह कौन-सी बड़ी बात हुई। तुम खाओ। मैं कल ही रंगा दूँगा।

दूसरे दिन राजकुमार अपनी माँ से बोला–माँ! खेत जाता हूँ उसे गोड़ने। तू दान देवी के हाथ जलपान भेज देना।

रानी को बड़ा ही आश्चर्य हुआ—तू राजा का बेटा होकर खेत में कुदाल चलाएगा?

तो क्या हुआ?–राजकुमार ने कहा–अपना काम तो करना ही चाहिए। सो दान देवी को जरूर भेज देना।

रानी ने फिर पूछा–क्या वह अकेली खेत तक जा सकेगी?

राजकुमार ने बताया–मैं कुदाल से चिह्न दिए जाता हूँ, वह उसे देखती चली आएगी।

राजकुमार चला गया। थोड़ी देर बाद दान देवी गई जलपान लिए। साथ में गया झाँझी कुत्ता।

राजा के बेटे ने एक गहरा गड्ढा खोद रखा था। बहन से बोला—देखो तो यह कुआँ कैसा हुआ ?



दान देवा जहाँ झुककर देखने लगी कि राजकुमार ने तलवार से उसके दो खंड कर दिए और उसी गड्ढे में गाड़ दिया। फिर उस शोणित में उसने अपनी पत्नी की चुनरी रंग ली।

बाकी बचा झाँझी कुत्ता। राजकुमार ने सोचा—कहीं यह न जाकर सारा भेद खोल दे। राजकुमार ने उसे भी काट दिया और पास में गाड़ दिया।

घर आकर चुनरी बहू को दी। वह तो खुशी से नाचने लगी।

घर वालों ने दान देवी के विषय में पूछा तो राजकुमार ने बताया—वह तो कब न चली आई।

चारों तरफ दान देवी की खोज हुई परन्तु वह रहती तब तो मिलती। लोगों ने सोचा—कहीं नदी, पोखरे में डूब गई होगी। सभी रो-धोकर चुप हो गये।

जहाँ दान देवी थी वहाँ चम्पा का पेड़ जन्मा और जहाँ झाँझी कुत्ता था वहाँ जन्मा कनेर का पेड़।

कुछ दिन के बाद दान देवी के ससुराल से गौना का दिन ठीक करने आदमी आने लगे। वहाँ किसी को नहीं मालूम था कि दान देवी अब इस दुनिया में नहीं है। राजा शोक का यह समाचार कैसे भेजते? सोचा था कि काठ की दुलहिन बनाकर गौने की रश्म पूरी कर देंगे।

दान देवी के ससुराल से पहला दिन आया एक नाई। वह उसी राह से जा रहा था जहाँ दान देवी थी। चम्पा का फूल देख वह तोड़ने लगा। यह देखकर दान देवी ने झाँझी कुत्ते से पूछा—

झाँझी कुकूर! झाँझी कुकूर!

फूल कौन तोड़े?

झाँझी कुत्ते ने उत्तर दिया—नौआ बरइता।

Scanned by CamScanner

दान देवी बोली—नौआ बरइता ,

फूल मत तोड़ें, डाल मत मोड़ें ,

भैया मारे, कुर खेत गाड़े ,

चुनरी रँगाये, बहू पिन्हाये

मुझे दिया बनवास ।

नाई को आश्चर्य हुआ कि फूल का पेड़ कैसे बोलता है । वह बिना फूल तोड़े ही चला गया ।

फिर दान देवी के ससुर, जेठ सभी उसी रास्ते से गुजरे । चम्पा के फूल को देखकर सबों को तोड़ने की इच्छा होती थी परन्तु तोड़ने के लिए हाथ लगाते ही फूल का पेड़ बोल उठता था—

ससुर जी, जेठ जी ,

फूल मत तोड़ें, डाल मत मोड़ें ,

भैया मारे, कुर खेत गाड़े ,

चुनरी रँगाये, बहू पिन्हाये ,

मुझे दिया बनवास ।

और फूल के पेड़ को आदमी की तरह बोलते देख सभी दंग रह जाते थे । वे बिना फूल तोड़े ही चले जाते थे ।

अन्त में आए दान देवी के स्वामी। वे जहाँ फूल तोड़ने लगे कि दान देवी ने झाँझी कुत्ते से पूछा—

झाँझी कुकूर! झाँझी कुकूर!
फूल कौन तोड़े?

झाँझी कुत्ते ने कहा—आप ही के स्वामी जी।

यह सुनकर दान देवी बोली—

स्वामी जी! स्वामी जी!
फूल मत तोड़ें, डाल मत मोड़ें,
भैया मारे, कुर खेत गाड़े,
चुनरी रँगाये, बहू पिन्हाये,
मुझे दिया बनवास।

यह सुनना था कि दान देवी के स्वामी ने चम्पा के पेड़ को जड़ से पकड़ कर खींच लिया। पेड़ उखड़ गया और उसके नीचे से निकली सोलह वर्ष की अपूर्व सुन्दरी। यही दान देवी थी।

कनेर के पेड़ के नीचे से झाँझी कुत्ता निकला।

थोड़ी देर में यह खबर बिजली की तरह फैल गई! राजा दौड़े आये। दान देवी ने सारा समाचार कहा।



मिथिला रिसर्च सोसाइटी

लहेरियासराय, दरभंगा

देसिल बयना सब जन मिट्ठा
ते तैसन जम्पओ अवहट्ठा

(Mahakavi Vidyapati)

Mithila Research Society has undertaken initiative of digitalization of rare and classical literary and research works in Maithili for readers and researchers. This is purely an attempt to preserve and popularize great works in Maithili for present and future generations to know their rich literary treasures. Art and literature shape a civilization. Mithila a cradle of learning has a glorious literary tradition right from Jyotirishwar Thakur and Mahakavi Vidyapati (medieval age) to Chanda Jha (pre independence era) to modern age represented by legends like Pandit Surendra Jha Suman and Pandit Chandranath Mishra Amar. Acclaimed Maithili author and researcher Dr Ramdeo Jha has been kind enough to allow access to his rich personal library for digitalization.

There is an exhaustive list of author, poet, playwright, critic and likes who chiseled Maithili literature into a great mosaic. Contribution of legends like Abhinav Vidyapati Bhavpritanand Ojha, Pandit Surendra Jha Suman, Kashikant Mishra Madhup, Kanchinath Jha 'Kiran', Ramcharitra Pandey 'Anu', Radhakrishna 'Baher', Yadunath Jha 'Yaduvar', Chhedi Jha 'Madhup', Pulkit Laldas 'Madhur', Deenbandhu Jha, Janardan Jha 'Jansidan', Murlidhar Jha, Jeevan Jha, Kavivar Sitaram Jha, Upendranath Jha' Vyas' Mahamahopadhyaya Umesh Mishra, Harinandan Thakur 'Saroj', Jagdishwari Prasad Ojha, Umapati Tiwari, Mahamahopadhyaya Madhusudan Ojha, Dr Sir Ganganath Jha, Mahamahopadhyaya Parmeshwar Jha, Mahamahopadhyaya Mukund Jha Bakshi, Ayodhyay Prasad Khatri, Nayayacharya Anand Jha, Umanath Jha, Tantranath Jha, Munshi Raghunandan Das, Ramdeo Srivastava, Sahdeo Srivastava, Bindeshwar Mandal, Jagdish Prasad Karna, Girindra Mohan Mishra, Brajnandan Thakur, Kalikumar Das, Subhadra Jha, Harimohan Jha,

Babu Bholalal Das, Dinanath Pathak, 'Bandhu', Shailendra Mohan Jha, Babuaji Jha Ajnat, Ramanath Jha, Fazul Rahman Hashmi, Ishnath Jha, Mayanand Mishra, Chandrabhanu Singh, RC Prasad Singh, Ramdeo Bhabuk, Dr Ramdeo Jha, Jaikant Mishra, Krishnakant Mishra, Pandit Chandranath Mishra Amar, Pandit Govind Jha, Dr. Ramdeo Jha, Ramkishore Jha 'Vibhakar', Dr Ratneshwar Mishra, Ravindranath Thakur, and other can't be forgotten. They dedicated their life to enrich Maithili literature with their outstanding literary creations. Many died unsung despite producing some of the best literary works and sadly they were forgotten. They selflessly devoted their life to serve Mithila and Maithili and bestowed upon us a rich heritage.

It was widely felt that books in Maithili are not widely available despite their huge demand by readers. Even outstanding literary works became rare due to lack of reprint.

Mithila Research Society is trying to bridge the gap by collecting and converting them in digital form. Mithila Research Society clarifies that this is purely a non-commercial undertaking hence any commercial use of the books is prohibited.

Mithila Research Society was established in 1905 by great poet Chanda Jha along with others. The organization was named as (Mithila Tatva Vimarshini (Mithila Research Society) to promote and preserve culture and literature of Mithila and Maithili besides promotion of teaching and learning of Sanskrit and Maithili, research and printing of popular texts of Mithila, research and publication of books related to history of Mithila

Pandit Chetnath Jha, Babu KC Mishra, Mukund Jha Bakshi, Pandit Gannath Jha, Munshi Raghunandan Das and Babu Tulapati Singh were on forefront along with Chanda Jha. Mahamahopadhyaya Parmeshwar Jha had written history of Mithila named as Mithila Tatva Vimarsha on request of Mithila Research Society. But the organization despite abundance of energy an dedication and hundreds of scholars deeply involved with the activity of the association could not flourish due to lack of desired support from society to an extent that people started calling Mithila Research Society as Murda Club; a dead organisation. That was a huge loss for Mithila.

But this was revived around year 1965 by Dr Ramdeo Jha under guidance of his senior Shailendra Mohan Jha. So far by the mid of year 2018 Mithila Research Society published over 150 books of Maithili literature and regularly undertakes activities for promotion of Maithili. Dr Ramdeo Jha is heading this institution assisted by Shankardeo Jha.

Vijay Deo Jha
9470369195, 8877213104 vijaydeojha@gmail.com

॥ श्री ॥


॥ बिज्ञापन ॥


मिथिलारिसर्चसोसाइटी

सम्यगुद्योगशीलस्य सहायः स्वयमीश्वरः ।

१ दरभङ्गामें एक सभा 'मिथिला रिसर्च सोसाइटी' (मिथिला तत्व विमर्षिणी) नामक लग भग डेढ़ वर्ष सँ अछि । (१) संस्कृत विद्याक पठन पाठन बढ़ायब; (२) मैथिल वा अन्यकृत ग्रन्थ जे मिथिलामें प्रचलित अछि तकर अन्वेषण ओ मुद्रित करब; मिथिला देश ओ मैथिल विद्वान् ओ अन्य विशिष्ट लोकनिक यथार्थ इतिहास लिखब; (४) मिथिलाक ऐतिहासिक स्थान ओ वस्तुसभक अन्वेषण ओ यथा साध्य जीर्णोद्धारक चेष्टा करब, (५) देशाचारानुसार आओर आओरो विषयक उन्नति करब, उक्तसभाक उद्देश्य छैक । एकर निर्वाह सकल साधारणक सहाय व्यतिरेक सम्भव नहिं । रिसर्च सोसाइटीक प्रार्थना जे मैथिलभ्रातृगण स्वोन्नतिमें प्रवृत्त होथि, परस्पर सहायता करथि, उपसभा नियुक्त कय रिसर्च सोसाइटीक साहिय करथि ।

२ एहि वर्ष इहो विचार भेलअछिजे एहि सभाक द्वारा निरीक्षण पूर्वक प्राचीन दुर्लभपुस्तक मुद्रित कयलजाय । एक दुइ व्यक्ति अपना अपना द्रव्यसँ पुस्तक छपयवापर उद्यतछथि। ओ एहिसभाक द्वारा छपाओलजायत । परन्तु एक दुइ व्यक्तिक साध्य एहनभारी कार्य नहिं, एकर तीनि उपाय छैक—

(१) श्रीमान् लोकनि द्रव्यक सहायता करथि, ताहि द्रव्यें उक्तसभाक द्वारा पुस्तक छपाओलजाय, एहि पुस्तक पर स्वत्व मिथिला रिसर्च सोसाइटीक रहैक पुस्तक विक्रय हो, तल्लब्ध द्रव्य मिथिला देशक उपकारार्थ व्यय हो । (२) अथवा श्रीमान् लोकनि अपना द्रव्यें एहि सभाक द्वारा पुस्तक छपावथि, सभाक दिशसँ प्राचीन दुर्लभ पुस्तक एकत्र कयल जाय, गृहीत पुस्तकक प्रूफ देखल जाय ओ मुद्रण कयल जाय । एहि परिश्रमक बदलामें दशांश मुद्रित पुस्तक अथवा उचित द्रव्य एहि सोसाइटीकें उक्त श्रीमान देथिन्ह। (३) अथवा जे कोनो पुस्तक रिसर्च सोसाइटीक दिशसँ छपय तकर ग्राहकरूपें उक्त सोसाइटीक सहायता श्रीमान् लोकनि करथि, समुचित द्रव्य दय पुस्तक खरीद करथि ।

३ रिसर्च सोसाइटीक संरक्षक विविध विरुदावली विराजमान मानोन्नत महाराजाधिराज श्रीमान् मिथिलेश तथा श्रीमान् बाबू शारदाचरण मित्र जज कलकत्ता हाइकोर्ट,—छथि । ओ दरभङ्गाक कलैक्टर साहबसँ प्रार्थना कयलगेल अछि जे ओ सभापति होथि । बाबू श्रीतुलापतिसिंह, बाबू श्री विन्ध्यनाथ झा बी० ए०, बाबू श्री गङ्गानाथझा ऐम० ए०, बाबू श्री विन्ध्येश्वरीप्रसादसिंहजी, श्री काली बाबू डाक्टर, महामहोपाध्याय पं० श्री चित्रधर मिश्र, कवीश्वर पण्डित श्रीचन्द्र झा, वैयाकरण केसरी पं० श्री परमेश्वर झा इत्यादि सभासदगणमें सँ छथि ।

४ रिसर्च सोसाइटीक मेम्बर हयबाक निमित्त फीस एक रुपैया नियत कयलगेल अछि ।

५ उक्त विषय सम्बन्ध में जाहि महाशय कें पत्राचार करबाक होइन्ह से निम्न लिखित सेक्रेटरी सँ करथि ।

दरभङ्गा
अगस्त १९०६

श्री केशी मिश्र बी० ए०
सेक्रेटरी मिथिलारिसर्चसोसाइटी
दरभंगा ।